माटी के रंग

(उत्तराखण्ड की बाल पहेलियां)

बूझो

और

समझो

डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
ग्राम/ पोस्ट पुजारगांव (चन्द्रवदनी)
हिन्डोलाखाल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

© संपादक : डॉ॰ सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
चित्रांकन-आवरण : RAMESH BADONI

प्रथम संस्करण : अगस्त 2013

मूल्य : 50 रुपये

मुद्रक :
मीडिया प्लस
77, सिद्धेश्वर एन्कलेव, केदारपुर देहरादून।

सर्वाधिकार सुरक्षित स्वत्वाधिकारी की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भाग का पुनर्मद्रुण, छायाप्रति अथवा अन्य माध्यम से हस्तान्तरण नहीं किया जा सकता है।

अपनी बात

जो व्यक्ति जिस समाज से सम्बद्ध होता है जहाँ पैदा होकर पलता, बढ़ता है वहाँ के बारे में, हर एक गतिविधि के सम्बन्ध में जानकारी होना जरूरी है। यदि बच्चों के परिप्रेक्ष्य में हम यह बात करें तो यह और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है, क्योंकि बच्चों को धरातलीय ज्ञान के आधार पर भविष्य को भी तरासना होता है। अपनी जड़ों से कटकर हर एक का अस्तित्व नष्ट हो जाता है। हिन्दी साहित्य की इस उक्ति के अनुरूप जिसमें कहा गया है– "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।" के केन्द्र बिन्दु भाव का अनुसरण करते हुए मैंने बच्चों के लिये उत्तराखण्ड के तीर्थ, ऐतिहासिक, स्थलों, महापुरूषों, स्थानीय परम्पराओं दैनिक जीवन में उपयोग करते आये खाद्य पदार्थों एवं अन्य अनेक विषयों पर केन्द्रित पहेलियों की रचना की।

ये पहेलियाँ मात्र समय व्यतीत करने के लिए नहीं अपुति बच्चों के बुद्धि परीक्षण, अपने परिवेश की जानकारी एवं वैज्ञानिक सोच पैदा करने, पर्यावरण प्रदूषण को नष्ट करने, अपने महापुरूषों को गहराई से समझने सामाजिक सरोकारों एवं आस्था के केन्द्रों की महत्ता को प्रतिपादित करने के उद्देश्य से रची गई है।

यहां पर एक और बात को भी मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि ये पहेलियाँ मात्र उत्तराखण्ड के बच्चों के लिये ही लाभकारी

नहीं है बल्कि देश एवं दुनियाँ के हर बच्चे के हित को केन्द्र में रखकर रची गई हैं, हाँ इतना अवश्य है कि हर एक पहेली का सम्बन्ध उत्तराखण्ड की धरती से जुड़ा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन पहेलियों से जहां वरिष्ठ साहित्यिक अभिरूचि के पाठक आनन्द का अनुभव करेंगे वहीं बालकों के लिए ये पहेलियाँ हर प्रकार से उपयोगी होकर वैज्ञानिक सोच के साथ सुयोग्य नागरिक बनानें, बुद्धि विकास और अपने चरित्र निर्माण के अतिरिक्त उत्तराखण्ड को समझने में सहायक होगी।

मैं इस कार्य की सफलता के लिए सोहन सिंह रावत, चण्डी प्रसाद बडोनी, **रमेश बडोनी,** के. आर. उनियाल, अपनी सहधर्मिणी श्रीमती कृष्णा सेमल्टी और तमाम उन लोगों का आभार व्यक्त करना अपना परम दायित्व समझता हूँ, जिनका किसी न किसी प्रकार से सहयोग इस कार्य में मुझे मिला है।

यद्यपि टंकण में सावधानी बरती गई है, फिर भी यदि अशुद्धियाँ रह गयी हो तो क्षमा करेंगे। आपके सुझावों व प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभाकांक्षी

डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी

अनुक्रमणिका

1.	स्थल	7
2.	महापुरूष	21
3.	सांस्कृतिक/सामाजिक परम्परायें	27
4.	खाद्य पदार्थ	38
5.	विविध	44

1

देश और दुनियाँ के ख़ातिर,
दो बहिनों को हुई कैद।
दिल के दुःख को दूर करने
अभी मिला नहिं वैद्य।
इनकी क़ुर्बानी देने से,
प्रगति करेगा देश – प्रदेश।
नाम बताओ इन बहिनों का,
जिनका अस्तित्व रहा नहिं शेष।

2

अंजनी सैंण, सैंकरी सैंण,
ऐसे बहुत हैं सैंण।
राजधानी जहाँ चाहते,
वह कौन सा है सैंण?

3

दो हजार नौ नवम्बर,
जन्म लिया जिसने धरा पर।
देश का सत्ताईसवां राज्य,
उत्तरप्रदेश में था ओ विभाज्य।
उस प्रदेश का नाम बतलाओ,
अपने को विद्वान जतलाओ।।

4

केदार – मद्महेश्वर
तुंग–रूद्र हैं चार केदार,
देवभूमि गढ़वाल में,
पांचवां कौंन है केदार?

5

देवप्रयाग – रुद्रप्रयाग,
कर्ण – नन्द प्रयाग।
उत्तराखण्ड की धरती पर,
पांचवाँ कौन प्रयाग?

6

सूर्यकुण्ड – गौरिकुण्ड,
तीसरा पवित्र भापकुण्ड।
उसको विद्वान जानो,
चौथा जो बताये कुण्ड।

7

दो बहिने आकार मिलती हैं,
तब पड़ता उनका गंगा नाम।
उस स्थान को क्या कहते हैं,
जहां पर हुआ यह पुण्य काम।।

8

उत्तराखण्ड की धरा पर,
जोशी – अणी – ऊखीमठ।
थोलिंग – केशोराय,
दो अन्य कौन पवित्र मठ।।

9

हेम – ब्रह्म – शिव – नारद,
हंस–तारा–जल–रूद्रकुण्ड।
इनके समान कौन,
उत्तराखण्ड में प्रमुख कुण्ड।।

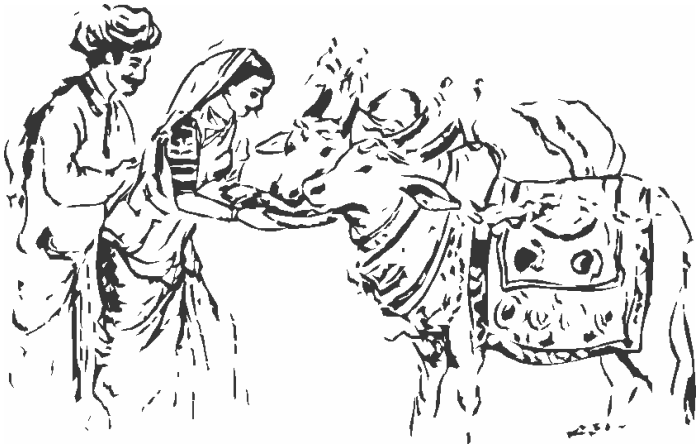

10

नौकुचिया–खुरपा–भीम–
पूना–सड़िया–देवरियाताल।
बताओ देवभूमि में,
कौन एक और ताल?

11

क्वीली – भरपूर – तोप,
लंगूर – देवलगढ़।
प्राचीन गढ़वाल में,
कुल कितने थे मुख्य गढ़?

12

शंकर का हुआ अपमान,
सती की जहाँ गयी थी जान।
चार अक्षर का उसका नाम,
बताओ कौन सा स्थान?

13

हिमालय पर्वत की तरह,
श्रेष्ठ न पर्वत कोय,
अन्य जो भी हैं सभी,
उससे छोटे होय।
वह पर्वत है कौन सा,
जो टूट चुका कयी बार।
प्रयास करते आ रहे,
मानव जा रहा हार।

14

एक पहनते एक में जाते,
दो शब्दों का मेल ।
उत्तराखण्ड का एक शहर है,
जाती उसमें रेल ।।
प्राचीनकाल में देवभूमि में,
आने के थे द्वार ।
एक द्वार तो हरिद्वार है,
पर दूसरा कौन है द्वार ?

15

कहते हैं उसे पहाड़ों की रानी,
बरसात में बहुत बरसता पानी।
जाड़ों में बर्फ के अन्दर छिप जाती,
पर्यटकों की इसकी याद है आती।
अंग्रेजों को यह बहुत था भाया,
इसीलिए दूर से यहाँ था आया।
ढालदार जमीन पर बसा है,
इस शहर का भी अजीब नशा है।

16

गोल्फ ग्राउण्ड मन मोहक जहाँ,
वह कौन सा खेत?
पर्यटकों का मन खींचता
इसके सौन्दर्य को देख।
यह एक हिल स्टेशन,
रूकी थी चन्द राजा की रानी,
घूमने आते दूर-दूर से
सौन्दर्य में नहीं किसी से सानी।।

17

पुरानी जल में डूब गयी,
नयी बस गयी धार।
इस शहर की बदौलत,
खिंच गये विद्युत तार।।
उस स्थान के नाम में,
आते अक्षर तीन।
रहते थे मानव जहां,
अब विचरण करती मीन।।

18

नरेन्द्र नगर नरेन्द्र शाह ने,
प्रताप शाह ने प्रताप नगर।
कीर्तिशाह ने कीर्तिनगर बसाया,
सुदर्शनशाह ने बसाया कौन सा नगर?

19

उत्तराखण्ड प्रदेश में,
वह ख़ूबसूरत स्थान।
देश-दुनियाँ के जन सभी,
करते हैं सम्मान।
पांच अक्षरों के मेल से,
बना है उसका नाम।
शिक्षा स्वास्थ्य और संस्कृति,
बाँटना उसका काम।।

20

जिसने धरा को सिंचित करने,
दे डाली पुत्र की जान।
उस माधो सिंह भण्डारी पर,
हम सबको अभिमान।।
ऋषिकेश–बदरीनाथ मार्ग में,
पड़ता है वह ग्राम।
मात्र तीन अक्षर हैं उसके,
बतलाओं क्या है नाम?

21

ओ बदलती हर दिन रूप,
जाड़ा वर्षा हो या धूप।
करती भक्तों का उद्धार,
लगाती सबका बेड़ा पार।।
काली रूप में उसकी शक्ति,
उसी शक्ति की होती भक्ति।
उस देवी का क्या है नाम?
श्रीनगर के निकट है जिसका धाम।।

22

राजशाही के खिलाफ,
हुये जेल में कैद ।
बड़ोनी वंश के थे पिता,
श्री हरिराम जी वैध ।।
चौरासी दिन तक रहे,
ये जेल में निराहार ।
मरते दम करते रहे,
विरोध, अत्याचार ।।
इस देश भक्त का बच्चों,
बताओं क्या था नाम?
अन्याय का विरोध करना,
सदा था जिनका काम।

23

हम पर मारो कुल्हाड़ियाँ,
ये पेड़ हैं निर्दोष।
मानव देह धारण कर,
कुछ तो रक्खो होश।।
वृक्षों पर चिपककर,
किया प्रचण्ड विरोध।
शत्रुपक्ष इसका तब,
कर न सका प्रतिशोध।।
ऐसी थी जो वीरांगना,
क्या था उसका नाम?
वृक्षों की रक्षा कर,
किया पुण्य का काम।।

24

एक का जन्म अयोध्या में हुआ,
एक जन्में गढ़वाल में राम।
गढ़ राजवंश, मन्मथसागर,
रचकर किया महान काम।।
जग में फैलाया बहुत यश,
साहित्य के दामन को थाम।
श्रीनगर धरा के उस सपूत का,
बतलाओ पूरा क्या था नाम?

25

चौदह अक्टूबर उन्नीस सौ इक्तीस,
जन्म हुआ अल्मोड़ा।
चौबीस उपन्यास, पन्द्रह कथा संग्रह,
लिख विपुल साहित्य को जोड़ा।
साधना, लोहिया जैसे इनको,
बहुत मिले सम्मान।
बताओ नाम तुम उनका बच्चों,
बढ़ाया जिन्होंने देश का मान।

26

बीस मई उन्नीस सौ को,
जन्म हुआ कौसानी।
युगवाणी, पल्लव आदि लिखकर
हुये कविता के दानी।
प्रकृति के सुकुमार कवि,
साहित्य क्षेत्र के सन्त।
ग्रामीण परिवेश में रचनायें करी,
जिनकी जात थी पन्त।
उत्तराखण्ड की धरा,
हुयी है इनसे धन्य।
उनका नाम बताओ तो,
विद्वान कहेंगे अन्य।

27

लाये पृथक राज्य की आंधी,
कहते उन्हें उत्तराखण्ड का गांधी।
विधायक स्वतंत्रतासंग्राम सेनानी,
उनकी बात सभी ने मानी।।
उत्तराखण्ड रंगमंच को दी पहचान,
उसे समझा इन्होंने शान।
किया प्रतिनिधित्व इसका,
दिल्ली-लखनऊ में प्रदर्शन जिसका।।
अन्त तक करते रहे वो काम,
बच्चों बताओ उनका नाम।।

28

अक्सर होते बैशाख के महीने,
महिलायें पहनती हैं तब गहने।
बच्चे सारे खुश रहते हैं,
रूपये दो यह सब कहते हैं।
दलबल बन सब गाँव से जाते,
बहुत सी चीजें खरीदकर लाते।
प्रतिदिन क्या होते हैं तब,
घूमने जाते हैं जब सब।
मनोरंजन करते सब भरपूर,
कभी जाना पड़ता है बहुत दूर।

29

औली दयारा बुग्याल़,
देवप्रयाग से ऋषिकेश।
पिथौरागढ़ के जौलजीवी में,
मारते खिलाड़ी रेस।।
बर्फ और पानी संग,
इन खेलों का मेल।
स्कीइंग राफ्टिंग केनोइंग,
किस श्रेणी के खेल?

30

उस दिन बनाते खिचड़ी सब,
त्यौहार मनाते खाकर तब।
शुभ मानते उस महीने को सब,
मांसाहार नहीं करते हैं तब।।
कहीं शादियाँ चूड़ाकर्म,
कई तरह निभाते धर्म।
कोई करता पुण्य का काम,
बताओ उस दिन का क्या नाम?

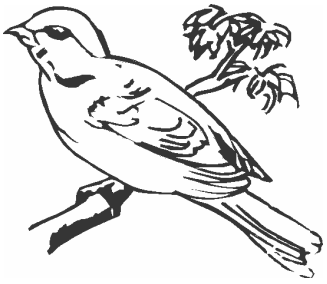

31

सन्तान सुख के ख़ातिर,
रात भर रहते हैं खड़े,
चाहे कोई कुछ भी हो,
नहीं मानते ख़ुद को बड़े।
इस काम में भगवान शंकर ,
देते हैं सबका साथ,
कुछ वर्षों के भीतर ही,
भक्तों की बनती बात।
बताओ उस भक्ति का नाम?
जिसके बल बनता है काम,
सूर्यास्त से रात्रि पर्यन्त तक,
हाथों में दीपक रखते थाम।
उत्तराखण्ड की यह प्राचीन परम्परा,
करो अन्वेषण इसमें तो जरा,
कैसे होती मनोकामना पूर्ण,
इसमें ऐसा क्या रहस्य भरा?

32

उत्तराखण्ड धरा पर,
हुये कयी आन्दोलन।
जिनमें जुड़ते रहे सदा
एक–एक कर सारे जन।।
उन्नीस सौ अठानब्बे में,
हुआ कौन सा आन्दोलन।
जिसमें जनता ने चाहा,
हमारे अधिकार में हों वन।।

33

महीने का होता प्रथम दिन,
प्रातः फूल लाते बच्चे।
पारम्परिक गीतगाते ,
सब लगते बहुत ही अच्छे।।
घर-द्वार में उन्हें डालना,
होता उनका काम।
मंगलमय उस दिन का बच्चों,
तुम बतलाओ नाम।।

34

पूरे महीने होते मेले,
ले जाते सब घर से धेले।
मनोरंजन करते सब भरपूर,
जाते मेले घर से दूर।।
तब रहता है मौसम सम,
गर्मी-सर्दी दोनों कम।
बताओ उस महीने का नाम,
उत्तराखण्ड में उसकी हाम।।

35

एक पैर से लचक-लचक कर
बच्चे खेलते - खेल।
कभी आपस में लड़ जाते हैं,
कभी दिखता अच्छा मेल।
कोठे बनाकर पत्थर को,
ठोकर मार-मार बढ़ाते।
खुद आपस में सीख लेते हैं,
इसको शिक्षक नहीं पढ़ाते।

36

हर बारह वर्ष में होता है,
पापों को सबके धोता है।
देश में इसके चार स्थान,
करते उस पर्व में स्नान।
उत्तराखण्ड का हरिद्वार शहर,
जिसमें बहती हैं कयी नहर।
इस तीर्थस्थल में होता यह पर्व,
जिस पर सम्पूर्ण देश को गर्व।
बताओ उस पर्व का नाम?
पुण्य बाँटना जिसका काम।

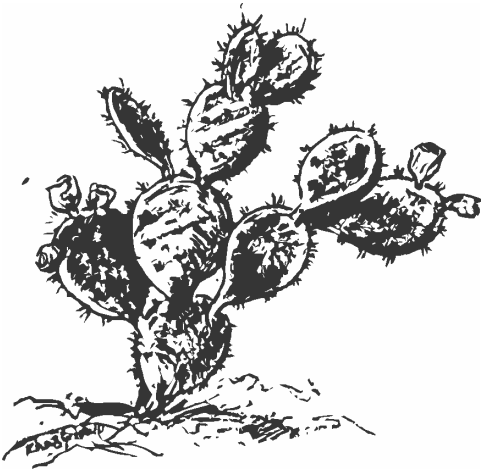

37

वह कौन सा होता मेला,
पत्थर का जिसमें फेंकते ढेला।
रक्षाबन्धन का जब पर्व है आता,
तब यह पत्थर युद्ध है होता।

38

काली–गौरी नदी संगम पर,
मेला लगता कौन?
स्थान धारचूला है वह,
बताओं क्यों हो मौन?

39

देवप्रयाग तीर्थ में जाते,
गंगाजल से सभी नहाते।
ढोल – दमाऊँ बजते हर घर,
मीठा भात खाते नारी–नर।।
बाँटते जौ की हरियाली,
कहते आती है खुशहाली।
माघ मास का यह त्यौहार,
नाम बताओ उसका यार।।

40

पूरे महीने बजते ढोल,
इतिहास की खुलती तब पोल।
बादक मुँह से गाते गीत,
उत्तराखण्ड की पुरानी रीत।।
देते उनको अन्न और धन,
इस काम को करते सब जन।
उस महीने का नाम बताओ,
अपने को बुद्धिमान जताओ।।

41

काले रंग का होता व्यंजन,
पकाते दोनों हाथ।
हरी सब्जी और घी के संग,
खाने में बनती बात।
मंहगे व्यंजन शर्माते हैं,
इस पकवान के आगे।
फिर भी छोड़ रहे उगाना,
ऐसे उत्तराखण्ड अभागे।

42

सील–बट्टे से मार–पीटकर
हड्डी – पसली एक।
दया आती निर्दोश को,
पिटता इस तरह देख।
जख्या के तुड़का संग,
लोहे की कड़ाई।
उसे खाने में मजा आता,
सब करते उसकी बड़ाई।

43

जब तक रहती पेड़ पर,
छू नहिं सकते हाथ।
सूक्ष्म काँटों से आच्छादित,
रहते डंठल-पात।
व्यंजन बनता है जब,
चूल्हे में इसे पकाकर,
मन संतुष्ट होता तब,
हर मानव का खाकर।
उत्तराखण्ड की थी यह,
अतीत में पहचान।
इससे मिटते रोग थे,
समझते थे इसको शान।

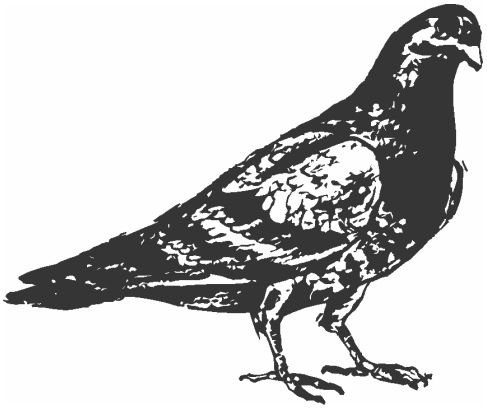

44

मालू के पत्ते के अन्दर,
करते उसको बन्द।
बड़ी ही मन मोहक,
आती उससे सुगन्ध।।
मावे से बनती वह,
एक मिठाई ख्रास।
पुरानी टिहरी में कभी,
होता था उसका वास।
तीन अक्षरों के मेल से ,
बना है उसका नाम।
गुजर गया वह वक्त अब,
जब उसकी थी हाम।।

45

चावल दाल मिर्च मसाला,
नमक मिलाकर संग,
क्या बना रहे ऐसा व्यंजन,
देखा मत रहना दंग!
छोटे बच्चे अस्वस्थ जनों को,
इससे मिलता लाभ,
करते इसका उपभोग सभी जन,
निर्धन धनी और साब।।

46

दूध चावल को संग पकाते,
हर एक को खूब छकाते।
पित्रों को भी अच्छा भाता,
खाने में बड़ा मजा है आता।
मात्र दो वर्णो का है नाम,
उत्तराखण्ड में इसकी हाम।
घी-शक्कर भी इसमें डालते,
तब मिलता जब गाय-भैंस पालते।

47

कोदे का आटा पानी संग,
मिलाकर होता काला रंग।
लोहे की कड़ाही पर पकाते,
फिर बच्चों को उसे खिलाते।
उन बच्चों के मिटते रोग,
जो करते इसका उपभोग।
उत्तराखण्ड के सारे बच्चे,
इसको खाकर निकले अच्छे।
दो अक्षर का इसका नाम,
करता है औषधी का काम।।

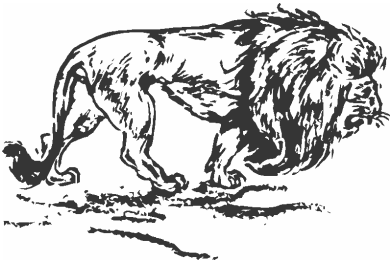

48

आता है मापने के काम,
जंगल का राजा जैसा नाम।
अक्सर भरते अन्न हैं इससे,
मिलती है सन्तुष्टि जिससे।

49

बनती थी जिस पर कभी,
पौष्टिक स्वादिष्ट दाल।
आज के इस नवयुग में,
आ गया उसका काल।
प्रेशर ने आकर लिया,
उस पात्र का स्थान।
बतलाओ बच्चों तुम,
उसका क्या है नाम?

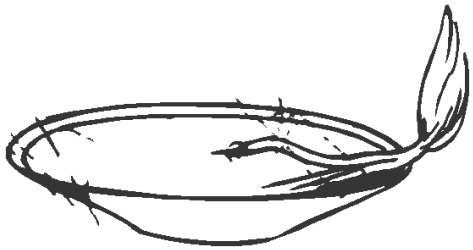

50

वनों से लेकर हर गांव–गली में,
बसता पहाड़ का एक पक्षी।
ख़ूब सूरत प्रियवाणी उसकी,
कुछ निर्दयी उसके भक्षी।
रची–बसी लोरी–विरही गीतों में,
चैत–बैशाख में गाती।
वृक्ष आंगन कभी मुंडेर से,
सुनकर मैत की याद आती।।
गले में माला से मनके,
बड़ी विचित्र सृष्टि की माया।
मटमैले रंग से मिलती,
कुछ–कुछ उसकी काया।।
बड़ा नहीं उसका शरीर,
जैसा होता गिद्ध।
उत्तराखण्ड में यह पक्षी,
किस नाम से प्रसिद्ध

51

गुफा हिन्दी में उसका नाम,
आता वर्षा-धूप में काम।
करते थे ऋषि-मुनि जन तप,
और कोई करते थे जप।
उनके अन्दर जीव-जन्तु भी रहते,
उत्तराखण्ड में उनको क्या हैं कहते?

52

दो अक्षर का उसका नाम,
आता है वह सबके काम।
होते कई आकार-प्रकार,
एक जैसा नहीं ढोते भार।।
बिना प्राण के वह चलता है,
आग लगे तो तब जलता है।
जब वह कन्धे पर है चढ़ता,
तब मानव आगे है बढ़ता।।

53

हिम से ढका रहता हर पल,
पिघल कर उससे बहता जल।
जन्म लेती हैं नदियाँ,
बह-बह कर बीत गई हैं सदियाँ।।
भारत की वह रक्षा करता,
कई तरह के संकट हरता।
बताओ उस पर्वत का नाम,
परोपकार है जिसका काम।।

उत्तर

1 भिलंगना- भागीरथी
2 गैरसैंण
3 उत्तराखण्ड राज्य
4 कल्पनाथ
5 विष्णुप्रयाग
6 तप्त कुण्ड
7 देवप्रयाग
8 गैरोला मठ- शंकर मठ
9 उदक कुण्ड
10 नैनीताल
11 बावन गढ़
12 कनखल
13 वरूणावत पर्वत
14 कोटद्वार
15 मसूरी
16 रानीखेत (अल्मोड़ा)
17 टिहरी
18 पुरानी टिहरी
19 देहरादून
20 मलेथा
21 धारीदेवी
22 श्रीदेव सुमन
23 गौरादेवी
24 मौलाराम
25 शैलेश मटियानी
26 सुमित्रा नन्दन पन्त
27 इन्द्रमणि बडोनी
28 थौल़ (मेले)
29 साहसिक खेल
30 मकर संक्रान्ति
31 खडुद्यू (खड़ा दीपक)
32 झपटो छीनो आन्दोलन
33 फूल संक्रान्ति
34 बैशाख
35 थुच्वा (एक खेल विशेष)
36 कुम्भ
37 देवीधुरा का मेला (जनपद चम्पावत)
38 जौलजीवी मेला (पिथौरागढ़)
39 बसन्त पंचमी
40 चैत
41 कोदे (मंडवे) की रोटी
42 आलू की थिंच्वांणी
43 कण्डाल़ी (बिच्छू घास)
44 सिंगोरी (पतबिड़ूया मिठाई)
45 खिचड़ी
46 खीर (एक पकवान विशेष)
47 बाड़ी (खाद्य पदार्थ विशेष)
48 सेर
49 भड्डू
50 घुघुति
51 उड्यार
52 झोला
53 हिमालय